श्री श्यामां जी आये इत

●

श्रीमती प्रेम--जालन्धर

श्री निजानन्द स्वामी श्री देवचन्द जी जो निजानन्द संप्रदाय के चलाने वाले हैं श्री बीतक साहेब से हमें पता चलता है वे हमारे लिए क्या है। सारे कष्ट तों अपने ऊपर उठाये, हमें त्रैगुण फाँस से मुक्ती दिला दी। यदि वे घोर तपस्या से न गुजरे होते तो हमें अपने धर्म और दूसरे धर्मों के भेद का पता न चलता।

हम भागवत को ही लें। १४ वर्ष तक एक भी नागा किये बिना लगातार भागवत सुनी। भागवत के एक एक भेद को समझा, जिसको सुनकर भागवत को मानने वाले भी हैरान रह गये। एकादशी को समझें वल्लभाचार्य मार्ग वाले इस परम्परा को कितना मानते है। श्री देवचन्द्र जी ने यह सिद्ध कर दिया कि एकादशी का महत्व भागवत की कथा के आगे कम है। वे आत्मा की खुराक को जोव की खुराक से अधिक महत्व देते थे। अपने आपको राधिका रानी समझकर श्री बाँके बिहारी जी को वह कितनी देर अपना इष्टमान कर उनकी पूजा करते रहे। धाम धनी आये तो पहले पहचाना ही नहीं। क्योंकि वे तो बाँके बिहारो की ही पूजा करते थे, श्री राज जी को कोई सुध न थी, कभी उन्हें याद नहीं था, धाम का भी पता नहीं था, अपना भी पता न था मैं कौन हूं यहाँ पर क्या करने के लिए आयो हूं।

प्रियतम आये श्यामा महरानी को अपनी सुध दी। मैं कौन हूं, तू कौन है, अपना घर कहाँ पर है। तुझे यहाँ पर किसलिये भेजा है। अब क्या करना है। जिसका जरा भी सम्बन्ध भागवत से नहीं है भागवत में जो ज्ञान आता है, बाँके बिहारी जी का है और हमारा बाँके बिहारी से यह सम्बन्ध है। जैसे ड्रामें के लिए कोई किसी भेष को धारण करता है उसी प्रकार श्री बाँके बिहारी और श्री राधा जी का महत्व हमारे लिए है। आज भी हम देखते है सब जगह रामायण के ड्रामें होते हैं। कोई राम बनता है कोई रावण बनता हैं क्या रावण को सारी उमर रावण समझा जाता है या राम के उस ड्रामें वाले रूप को लेकर उसकी पूजा ही होती रहती है। ऐसा नहीं है। ड्रामे के बाद उनको कोई राम रावण नहीं मानता। उनका वही नाम रहता है जो होता है।

निजादन्द सम्प्रदाय वाले जानते हैं, योगमाया में जो रास हुई तब शक्ति श्री राज जी की थी, श्यामा जी को थी, रूहों की थी। अब नहीं है। तब जागनी का ज्ञान नहीं था, हमें समझ नहीं थी, लेकिन अब हम वाणी को पढ़ते हुए भी समझते

Nijanand App

हुए भी राधा अष्टमी कृष्ण जन्म अष्टमी मना रहे है कहाँ तक ठीक है। भागवत के पाठ रख रहे हैं। सुन्दर साथ को भागवत पढ़ने की प्रेरणा दे रहे हैं। ऐसा क्यों ? क्या श्री देवचन्द्र जी ने जब उन्हें तारतम का ज्ञान हो गया था तो भागवत सुनी, वाणी में भी कहीं पर भागवत का इतना महत्व नहीं है। गवाहियों के लिए लिखा है। वे तो उसी दिन काहन जी भट्ट को प्रणाम कर आये थे कि मैं आगे से यहाँ नहीं आऊंगा, मेरी प्रतीक्षा न करना। हमें सही रास्ता दिखाया हैं उन्होंने हम न समझे गलती हमारी है। श्री निजानन्द स्वामी ही हमारे पथ प्रदर्शक हैं हमें सब धर्मो का ज्ञान करवा दिया किस के पास वह नहीं गये, कनफटों के पास गये। संन्यासियों के पास गये। योग वालों से योग की शिक्षा ली, अपने गुरु श्री हरिदास गोसाई जी की वह सेवा की जिसकी हमें मिसाल नहीं मिलती, घर पर श्री बाँके बिहारी जी की सेवा रखी तो भी उन्होंने कितने शुद्ध भाव से सेवा की हकीकत में उन्होंने घोर तपस्या करके हमारे रास्ते को सरल बना दिया कि इन सब बातों से हमें धनी नहीं मिल सकते। धनी मिलेंगे तो निसबत से मेहर से। हमें श्री बीतक साहेब से शिक्षा लेनी चाहिए।

श्री धनी देवचन्द्र जी निजानन्द जी के स्वरूप हैं। हमें तो सुन्दर साथ का नाम भी उनके नाम से ही मिला है परमधाम में श्यामा जी का नाम सुन्दरबाई है। जो उनके साथ आये उनका नाम सुन्दरसाथ हो गया। श्री देवचन्द्र जी के जन्म के समय पर श्री बीतक साहेब में लिखा है, "बधाई चौदह लोक को। वास्तव में यह बधाई चौदह लोक को ही है क्योंकि चौदह लोक को मुक्ती का रास्ता श्री निजानन्द स्वामी ने ही दिखाया हैं। इनसे पहले सब अटकले ही थी कोई रास्ता बताने वाला न था। निजानन्द सम्प्रदाय को चलाने वाले निजानंद स्वामी धनी श्री देवचन्द्र जी हैं।

●

कई कसोटी करी दुलहिन,
सो कारण हम सैयन
पिया जी किये सब प्रसन्न
तीन बेर दिये दरसन।
ब्रह्मसृष्टि मिने सुन्दर बाई,
ताको धनी जी ये दई बड़ाई
सब सैयों में सिरदार,
अग याही की हम सब नार

●

Nijanand App

पृष्ठ संख्या १४ का शेष

आप में ही आपका राम आप होके रहता है।"

निजानन्द चतु:शती का सार संदेश अपनी निजता की ओर ले जाना है। आज संसार जब भौतिक चकाचौंध की ओर आकर्षित होकर अपने आप से टूटता जा रहा है, और आत्मानन्द के खजाने से दु:ख के सागर में धंसता जा रहा है, आइए निजानन्द चतु:शती पर मैं कौन हूँ ? का प्रश्न कर हम आत्मज्ञान के पथ के पथिक होकर निजानन्द की प्राप्ति की कामना करें।

--प्रणाम

"साकुमार सखी"

(बबली फरीदाबाद)

सजदा मेरा तुम्हें साकुमार सखी री।
तुझ बिन जा ना सकेंगी हम धाम सखी री।

तुम हो आनन्द में छिपी इस खेल में सखी री।
हम सब बैठी है तुम्हारी याद में सखी री।

दिल मेरा घबराये इस जहाँ में सखी री।
तुम हो माया के सुखों में मस्त सखी री।

सही नहीं जाती जुदागी साथ की सखी री।
दिल मेरा रोये तुम्हारी याद में सखी री।

धाम के दुल्हा आये हैं तुम्हें लेने सखी री।
चली आओ जहां हो एही आस सखी री।

सजदा मेरा तुम्हें साकुमार सखी री।
तुझ बिन जा ना सकेंगी हम धाम सखी री।

Nijanand App